INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

अन्धविश्वास/पाखण्डवाद के बीच विलुप्त होती भारतीय संस्कृति

(Indian Culture Disappearing Between Superstition and Hypocrisy)

डॉ. राजेन्द्र सिंह

समाजशास्त्र विभाग

लालाराम श्रीदेवी महाविद्यालय,

अतरौली (अलीगढ़)

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2022-92658859/IRJHIS2210009

प्रस्तावना :

मेरा किसी जाति–धर्म से कोई विरोध नहीं है। हर पढ़े–लिखे इंसान का कर्तव्य है कि सबकी भावनाओं का ख्याल रखे। पर इन्सान की कोख से पैदा हुए ज्यादातर लोगों को बचपन में सिखा दिया गया हर कोई मुँह से पैदा हुआ, कोई भुजा से, कोई पेट से व कोई जांघ से। 21वीं सदी में विभिन्न आयामों से पैदा करने की बकलोल/गपोड़ कथाओं के मुताबिक कोई पैदा नहीं हो पा रहा है।

तथाकथित 3000 साल पहले लिखे सारे धर्मग्रन्थ फेल हो चुके हैं हालांकि 1578 में पुर्तगालियों ने पहली प्रिटिंग प्रेस मालावार, केरल में लगाई थी लेकिन धर्मग्रन्थों को अति प्राचीन व असली बताकर इधर–उधर पेले जा रहे हैं। संविधान में कर्तव्यों को लेकर कई उपबन्ध किये गए हैं उसमें एक यह भी है कि वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना है जब संविधान में लिखित वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने की कोशिश होती है तो विरोध किस बात का और क्यों?

पाखण्डी लिख दो तो एक जाति विशेष की आस्था/भावना नाराज हो जाती है। कर्मकाण्डी लिख दो तो एक जाति विशेष के लोग पंचायत करने लग जाते हैं जबकि पंचायती व्यवस्था से उनका कोई लेना–देना नहीं होता है। पंचायत/खाप आदि उनके विषय ही नहीं लेकिन युवाओं को डराने का नाटक शुरू कर देते हैं। पंडित कौन होते हैं/पुजारी कौन होते हैं/कर्मकाण्डी कौन होते हैं। हमें आज तक शास्त्रों का हवाला देकर यही बताया गया है कि ब्राह्मण जाति में पैदा होने से नहीं बल्कि अपने कर्मों से बनता है।

क्या पंडित की कोई जाति होती है? क्या पुजारी एक ही जाति से हो सकता है? कर्मकाण्ड करने का टेंडर क्या हिन्दू धर्म में किसी जाति विशेष के नाम से ही निकलता है? चाहे लाख कोशिश कर लो बरगलाने की, चाहे कितने ही आस्था/भगवान के नाम पर नाटक कर लो हिन्दू कोई धर्म नहीं बल्कि ब्राह्मण धर्म के नाम पर देश के मूलनिवासी लोगों को ठगने का नया प्रारूप है।

मनुस्मृति की वर्ण व्यवस्थाओं को बनाये रखने की एक नाकाम कोशिश है। इस्मत चुगताई ने लिखा है कि जहां गरीबी होती है वहीं अज्ञानता के घोड़े पर धर्म के ढेर बजबजाते हैं।

ब्राह्मण धर्म जिसको आजकल हिन्दू धर्म की चाशनी लगाकर बताया जा रहा है उसके बारे में पेरियार ने लिखा

है कि जो धर्म तुम्हें नीच ठहराता है उस धर्म को लात मार दो।

मैं बस यही बात बताना चाहता हूँ कि तुम्हारे साथ भेदभाव इसलिए होता है क्योंकि तुम उस धर्म में अस्तित्व ढूँढ रहे हो। अगर तुम शूद्र न होने की आवाज उठाओ तो कोई ब्राह्मण होने का दावा करे आपका शोषण नहीं कर सकता। तुम शूद्र इसलिए हो क्योंकि तुमने ब्राह्मणवाद को अपना लिया है। जो व्यवस्था तुम्हें नीच–निम्न घोषित करती है उसमें जगह क्यों ढूँढ रहे हो? उस व्यवस्था में तुम्हें क्या हासिल हो जाएगा? हिन्दू धर्म के नाम पर जाति विशेष के लोगों द्वारा फेलाये आतंक का सामना हम कदम–कदम पर कर रहे हैं इस आतंक के आगे हमारी युवा पीढ़ी विकलांग हो चुकी है। मानसिक ही नहीं बल्कि आर्थिक तौर पर भी।

हालात इतने खराब हैं कि अपने गरीब भाई के बच्चे को पढ़ने के लिए धेला नहीं देंगे लेकिन पाखण्ड व अंधविश्वास के कार्यक्रमों में लाखों–करोड़ों का योगदान देंगे। समाज अपने ही समाज के शिक्षकों, बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों को भुलाकर अनपढ़–गवांरों के हाथों आई अप्रत्याशित पूँजी व सहानुभूति से चुनाव जीते राजनेताओं के आगे हारता है। मार्टिन लूथर किंग लिखते हैं– "सबसे बड़ी त्रासदी बुरे व्यक्तियों का अत्याचार नहीं इस पर अच्छे लोगों का मौन रहना है।" क्या पिछले तीन दशकों तक अपने समाज के लोगों ने चुप रहकर अपने ही समाज के साथ अपराध नहीं किया है? अगर अपने समाज के युवाओं के साथ खड़े नहीं होते तो उनके लिए युवा दरीजन बनकर अपना भविष्य क्यों खराब करें?

बाबासाहेब ने लिखा था –"जाति व्यवस्था का मतलब अंतर्जातीय भोज व विवाह नहीं बल्कि धार्मिक धारणाओं का नाश करना है जिन पर जाति व्यवस्था टिकी है।" क्या ब्राह्मण धर्म के सारे शास्त्र वर्ण व्यवस्था का समर्थन नहीं करते? जहाँ नींव में ही विभेद हैं वहां समानता कोई क्यों ढूँढने आये?

जिस सवाल को लेकर एक युवा साथी पर मुकदमा किया गया वो सवाल 15वी सदी में संत कबीर ने भी किया था। **कबीर कहते हैं–**

माटी का नाग बनाके पूजे लोग लुगाय,
जिंदा नाग जब घर में निकले, ले लाठी धमकाया।
जिंदा बाप कोई न पूजे, मरे बाद पुजवाया,
मुठ्ठी भर चावल लेके कौवे को बाप बनाया।

जब बुजुर्ग की मौत से पहले कथा करके स्वर्ग में सारे इंतजाम के सपने दिखाए, मौत पर कर्मकाण्ड करके स्वर्ग भेजने के सारे कर्मकाण्ड कर लिए तो उसका वारिस क्यों नहीं पूँछ सकता कि अब श्राद्ध का हवाला देकर पुरखों को भूखा क्यों बताया जा रहा है और ऐसी कौन सी डाक व्यवस्था है जिससे खाना स्वर्ग लोक में पहुँच जायेगा?

ब्राह्मण ने कह दिया कि धर्म मेरी दुनियाँ है, क्षत्रिय को बता दिया कि लड़ना व मरना ही तेरा पेशा है, वैश्य वर्ग को बता दिया पूँजी तेरी दुनियाँ है व शूद्रों को बता दिया कि इन सबकी सेवा/गुलामी करना तेरा कर्तव्य है।

जब धर्म की धुरी पर काबिज ड्राइवर का दुनियाँ की व्यवस्थाओं से मुकाबला हुआ तो वर्ण की क्रमिक व्यवस्था डांवाडोल हो गई। आज वैश्य के पास पूँजी है और ब्राह्मण उनकी भक्ति में लगे हुए हैं क्षत्रिय रक्षक होने के बजाय वैश्यों के यहां गार्ड की नौकरी करने को मजबूर है। शूद्रों को किसी ने बता दिया कि आप हजारों सालों से शोषित रहे हो इसलिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को गाली देकर हंगामा करते रहे ताकि कुछ न कुछ हिस्सा राहत कार्यों में मिल जायेगा।

इस भेदभाव भरी व्यवस्था की नींव शूद्र है अगर शूद्र खुद को शूद्र समझने से इनकार कर दें तो सारी समस्याओं की जड़ ही खत्म हो जायेगी लेकिन खुद को शोषित, वंचित, पीड़ित बताने वाले शूद्र उसी व्यवस्था में हंगामा करते हैं जिस व्यवस्था ने उसको नीच/निम्न घोषित कर रखा है।

ब्राह्मण धर्म द्वारा घोषित शूद्र बगावत करेंगे भी तो मन्दिर में प्रवेश के लिए, स्कूल के लिए नहीं। अगर लड़ाई लड़ेंगे तो घोड़ी पर चढ़ने के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति या राज्य के राज्यपाल की कुर्सी के लिए नहीं। उन्हीं कर्मकाण्डों में बराबरी के लिए जिससे छुटकारा पाने के लिए जिसके आवरण को ओढ़ने से किसान वर्ग इन्कार कर रहा है।

उच्च होने की नींव व शूद्र बने रहने की नींव समानान्तर रूप से चल रही है। यही अंतहीन प्रतियोगिता है जिसका कोई परिणाम नहीं निकलना है ब्राह्मण धर्म के मुताबिक निम्न घोषित लोगों ने मान लिया है कि हम निम्न हैं और इसी व्यवस्था में थोड़ा बहुत कुछ मिल जाये तो सन्तुष्टि को प्राप्त कर लेंगे। यह स्वघोषित हार है। यह स्वीकार्यता है कि हम निम्न रहे हैं और हैं व आपके यहीं मजदूरी करके कुछ सुविधा चाहते हैं यह सुविधा चंद दलालों की दलाली का कारोबार तो चला सकती है लेकिन समानता, स्वतन्त्रता व बंधुता की भावना को कभी गुलजार नहीं कर सकती। गुलामी जंजीरें अपने ही हाथों से तोड़ी जा सकती हैं चाबी लेकर खोलने आने वाले सौदागर होते हैं।[1]

सर्वाहारी से शाकाहारी बनने के घातक परिणाम –

नॉनवेज न खाने के घातक परिणाम आज के उन शाकाहारी युवक–युवतियों में देखने को मिल रहे हैं, जिनके माँ–बाप ने बचपन से ही शाकाहारी के साथ–साथ मांसाहारी भोजन छोड़कर पूरी तरह से शाकाहारी भोजन पर निर्भर हो गये हैं। कुदरत समस्त जीव–जन्तु व पशु–पक्षियों की रचना व कुदरती स्वभाव के निर्माण के आधार पर खानपान भी निर्धारित किया है और खान–पान के आधार पर ही मानव सहित सभी जीव–जन्तुओं की शारीरिक पहचान भी बनाई है। जिसे साधारण युवक–युवतियां भी आसानी से पहचान व समझ सकते हैं। शाकाहारी, मांसाहारी व सर्वभक्षी/ सर्वाहारी भोजन के लिए मानव सहित जीव–जन्तु व पशु–पक्षियों में मुख्यतः आठ अलग–अलग पहचान हैं जिसमें प्रे दाँतों की संरचना व शारीरिक बनावट शामिल है।

दांतों की संरचना के आधार पर शाकाहारी, मांसाहारी व सर्वभक्षी होने की पहचान निम्न लिखित मानी गयी हैं–

शाकाहारी जीवों के दांत एक ही पंक्ति में व एक–दूसरे से सटे हुए होते हैं तथा इनके नुकीले दाँत नहीं होते है, इनका आगे का भाग पतला और पेट व पिछवाड़ा भारी तथा डरपोक स्वभाव के होते हैं। जैसे– गाय, भेड़–बकरी, हिरण आदि। इनका सीना पिछले भाग की तुलना में छोटा व पेट भारी होता है।

मांसाहारी जानवरों के हर दो दांतों के बीच गैप (अन्तराल) होता है और इनके मुँह के दोनों जबड़ों में चार दाँत नुकीले होते है। जैसे– शेर, बिल्ली, कुत्ता आदि। इनके शरीर के आगे का भाग बड़ा अर्थात छाती चौड़ी/बड़ी और पेट व पिछवाड़ा पतला होता है।

सर्वभक्षी जीवों को मांसाहारी भोजन के अतिरिक्त शाकाहारी खानपान दोनों जरूरी हैं। कुदरत के नियमों के विपरीत खानपान बदलने से जीव के स्वभाव में परिवर्तन के अतिरिक्त उनके शरीर में अनेकों तरह के विकार पैदा हो जाते हैं। जिसके परिणाम उन युवक–युवतियों में आसानी से देखे जा सकते हैं, जिनके दादा–दादी तथा माता–पिता ने मांसाहारी भोजन त्याग कर केवल शाकाहारी बन गये हैं, जिसके कारण इनकी संतानों के शरीर में अनेकों प्रकार की गिरावट पैदा हो गयी हैं।

ऐसे शाकाहारी परिवारों के शाकाहारी युवक–युवतियों की छाती अन्दर की ओर धंस गयी हैं और इनके माँ–बाप की हाईट की तुलना में उनके बच्चों की औसत हाईट में भी गिरावट हो रही है। सर्वाहारी से शाकाहारी बनने के दुष्परिणाम उनकी पीढ़ी–दर–पीढ़ी में शारीरिक गिरावट देखने को मिल रही है।

बीज और गर्भ – अगर कोई भी किसान बहुत मेहनती है मगर उसके खेत की जमीन में विभिन्न प्रकार के खनिज तत्वों की कमी है तो वह चाहे कितनी भी मेहनत कर ले व अच्छे से अच्छे बीज से बिजाई करे तब भी उसके खेत में बढ़िया फसल नहीं होगी उसी तरह मादा का शरीर भी खेत की तरह हैं अगर मादा के शरीर में विभिन्न

खनिज–तत्वों की कमी है तो स्वस्थ्य व दमदार बच्चे पैदा होना असम्भव हो जाता है।अतः गर्भवती महिलाओं को उचित मात्रा में नॉनवेज खिलाने से बच्चे व महिलाओं के स्वास्थ्य, मानसिक व शारीरिक विकास के लिए अधिक फायदेमन्द रहता है।

दुनिया में भारत ही एकमात्र देश है जहां के शाकाहारी युवक–युवतियों के कद, सेहत व शारीरिक रचना में गिरावट हो रही है। वहीं युवकों में सैक्स सम्बन्धित विकृतियां पैदा हो गई हैं शाकाहारी परिवारों के बच्चे भेड़–बकरियों की तरह बोलने में माहिर हो सकते है, मगर वे स्वाभाविक रूप से डरपोक, भारी–पेट, दूबले–पतले, छाती बैठी हुई व विभिन्न खनिज–तत्वों की कमी से कुपोषित हो रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक सर्वेक्षण के अनुसार अकेले जयपुर शहर में पन्द्रह से उन्नीस साल की 47 प्रतिशत लड़कियां तरह तरह के विटामिन्स, प्रोटीन, आयरन व अति आवश्यक खनिज तत्वों की कमी से कुपोषणग्रस्त बताई गई हैं। हालांकि गर्भवती महिलाओं को केवल आयरन की कमी की पूर्ति के लिए जानवरों के खून से बनी हुई आयरन की टेबलेट देकर शारीरिक कमी की खानापूर्ति की जाती है। परन्तु ध्यान देने वाली बात यह है कि सप्ताह में दो–तीन बार सौ–सौ ग्राम नॉनवेज खाने से बच्चे व गर्भवती महिलाओं के शरीर के लिए उन सभी पोषक तत्वों की पूर्ति हो जाती है तो दो–चार किलो विभिन्न प्रकार के फल–फ्रूट, साग–सब्जियों, दूध, घी आदि खाने पर भी नहीं होती हैं।
फैसला खुद करें! आपको कुपोषणग्रस्त औलोदें चाहिए या रामदेव जैसा कीर्तन करता हुआ शरीर व ढोल जैसे पेट वाले बच्चे चाहिए..... ।[2]

धार्मिक बलात्कार – अधिकांश आश्रम डेरे अखाड़े बड़े–बड़े मन्दिरों धाम, शेल्टर होम, आध्यात्मिक शिक्षण संस्थाओं, विश्वविद्यालयों में लावारिस लड़के–लड़कियों की कमी नहीं होती है। जिसमें अधिकांश घर से भागे बच्चे और अपहरण किये गये बच्चे व कन्याएं शामिल हैं। यही वे बच्चे हैं जो धर्माचारियों के शिष्य बनकर जहाँ धर्माचारियों का आधार मजबूत करते हैं, वहीं यही लड़के–लड़कियाँ मजबूरन धर्माचारियों नेताओं व बड़े–बड़े पूँजीपतियों के शोषण व बलात्कार का शिकार होते हैं।

दूसरी ओर विभिन्न धर्मगुरू के अनुयाई बनने वाले लड़के–लड़कियाँ व महिलाएँ मानती हैं कि उनके साथ किसी बाबा ने बलात्कार नहीं किया है। वैसे भी कोई भी महिला या लड़की ऐसे अवैध सम्बन्धों को कभी भी स्वीकार नहीं करती हैं। हकीकत यह भी है कि ऐसी अनेकों लड़कियाँ व जवान, गरीब अमीर, शादीशुदा महिलाएँ होती हैं जो किसी न किसी लालच में आकर धर्मगुरू या बाबा के किसी चेले–चपाटे के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाना कोई हैरानी वाली बात नहीं है पर ऐसी हालत में लावारिश लड़के–लड़कियाँ आखिरकार जाएँ तो कहां जाएं!!!!! इसलिए उन्हें धर्मगुरू द्वारा किये जा रहे शोषण बलात्कार आदि हैवानियत झेलनी पड़ती हैं।

जब तक धर्म का खोल लोग ओढ़े रखेंगे और धर्मगुरू के नाम पर पाखण्डवाद को जिन्दगी में अपनाते रहेंगे, तब तक धर्म के नाम पर लड़के–लड़कियाँ व औरतों के साथ बलात्कार होता रहा है और होता रहेगा तथा बुराई का यह सिलसिला सनातनकाल तक चलता रहेगा। आश्रम, डेरों अखाड़ों में जाना, गुरू बनाना, चमत्कार के नाम तमाशा देखना, मुफ्त में रोटी सब्जी खाना, प्रवचन देना, नाम लेना आदि धर्म के नाम से वे धन्धें हैं, जिन्हें इनके भक्त अनुयाई सेवक दास चेले बनने वाले कभी नहीं समझ पायेंगे क्योंकि ऐसे युवक युवतियाँ व बड़े–बुजुर्गों को इनके प्रति गहरा लगाव हो जाता है जिसे धार्मिक भाषा में आस्था, सामाजिक भाषा में नशा और चिकित्सा विज्ञान की भाषा में सनकी या आधा पागल कहते हैं।

आस्था लगाव मोह प्यार प्रेम का सीधा सम्बन्ध दिमाग से होता है और इनका मूल भावार्थ एक ही होता है जबकि सामाजिक क्षेत्र में परिवार व आपके साथ व आसपास रहने वाली चीज जीव–निर्जीव व रिश्ते नाते सम्बन्धित होते हैं पर धार्मिक क्षेत्र में उस अदृश्य चीज जीव–निर्जीव से लगाव कर लेते हैं या धर्म के नाम पर धर्मगुरूओं द्वारा उस

निर्जीव व अदृश्य चीज से प्यार करवा दिया जाता है, जिसे कभी आपने व आपके किसी पूर्वज ने देखा नहीं है और ना ही कभी दिखाई देता है। इसे धार्मिक रूप से सम्मोहित किया जाता है। दुनियां के सभी धर्म, ग्रन्थ, देवी–देवता व कथा कहानियाँ प्राचीन काल से लिखी हुई बताई जाती हैं और आकाश में पैदा होकर धरती पर आई हुई बताई जाती हैं। सभी ग्रन्थों को लिखने की शैली भी एक जैसी है आपको कौन सी वैराइटी का देवी–देवता चाहिए..... वैसे ही देवी–देवता व धर्मगुरू बाजार में उपलब्ध हैं क्योंकि धर्माचारियों द्वारा आम जनता को अपने धार्मिक चक्रव्यूह में फँसाना है और आपको किसी न किसी धर्म के धर्माचारी के चक्रव्यूह में फँसना तय है क्योंकि यह भी धन्धेबाजों के धन्धे का सवाल है।

अगर भारत की राजनीति संस्कृति, कार्ययोजना, कार्यपद्धति और इसकी व्यापकता का गौर से अध्ययन किया जाए तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि भारत में राजनीति से ज्यादा व्यापक और समावेशी गतिविधियां इसके अलावा और कहीं नहीं है। सभी राजनीति दलों में ऊपर से नीचे तक जितने नेता और कार्यकर्ता हैं उसे देखकर यह आसानी से समझा जा सकता है कि भारत में कृषि को छोड़कर और किसी भी क्षेत्र में इतनी संख्या में लोग कार्यरत नहीं हैं और न ही इतने लोग कहीं रोजगार पा रहे हैं।

गाँव–गाँव और शहर–शहर हर जगह किसी न किसी राजनीतिक दल से जुड़े छुट भैया या कार्यकर्ता जरूर मिल जाएंगे। कृषि के बाद राजनीति ही ऐसा जगह है जहाँ सबसे ज्यादा लोग अपनी जीविका के लिए आश्रित हैं। राष्ट्रसेवा, देश सेवा और समाज सेवा ये सिर्फ दिखावा है वास्तव में राजनीति भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक गतिविधियों वाला क्षेत्र है, जिसमें कई तरह के लोग कई रूपों में जुड़े हुए हैं बड़े राजनीतिक दल तो बहुराष्ट्रीय कम्पनी की तरह हैं जिसमें विभिन्न तरह के काम करने के लिए विभिन्न तरह के लोगों को रखा गया है। राजनीति अकेला ऐसा क्षेत्र है जिसमें हर तरह की योग्यता, चरित्र और विचार के लोग आसानी से खपाए जा सकते हैं साधु–संत हो, बुद्धिजीवी या विचारक हो, धनी हो या गरीब हो, बाहुवली हो या शरीफ या फिर गुंडा और अपराधी हो, सबको उनकी योग्यता और सामर्थ्य के अनुसार काम मिल जाता है।

इसमें नियुक्ति की कोई निश्चित और निर्धारित प्रक्रिया नहीं है काम की इतनी आजादी और किसी भी क्षेत्र में नहीं है आपको कभी भी हटाया जा सकता है या आप खुद भी किसी भी समय छोड़कर दूसरी जगह जा सकते हैं कोई रोक–टोक नहीं है।

आप कभी भी किसी की आलोचना करने यहाँ तक कि गाली देने के लिए भी स्वतन्त्र है और फिर तुरन्त ही उसे गले भी लगा सकते हैं या चरण पखार सकते हैं। यहाँ अनवरत साँप और सीढ़ी का खेल चलता रहता है कभी भी आप फर्श से अर्श और अर्श से फर्श तक की यात्रा कर सकते हैं।

यहाँ कोई किसी का स्थायी दोस्त या दुश्मन नहीं होता है यहाँ तक कि जो दिन में दुश्मन है, वो रात में दोस्त भी बन सकता है इतनी गतिशीलता और कहीं भी नहीं है। सबसे बड़ी बात यह है कि आप कितने ही गंदे, मूर्ख, क्षुद्र, धूर्त, मक्कार, बदमाश या चरित्रहीन हों, राजनीति का ठप्पा लगते ही आप सम्मानित लोगों की श्रेणी में शामिल हो जाते हैं।

राजनीति में स्थापित होते ही आप समाज, परिवार, पास–पड़ोस, शासन–प्रशासन, व्यापारिक और प्रशासनिक क्षेत्र में अपनी प्रभावी भूमिका निभाने के काबिल हो जाते हैं जीवन में इतनी जल्दी से तरक्की करने का और कोई भी क्षेत्र नहीं है।

हिन्दुओं में फैले अन्धविश्वासों और कुरीतियों के बारे में लिखो तो तुरन्त कुछ लोग आकर कहते हैं कि दम है तो मुसलमानों के बारे में लिख कर दिखाओ!

मेरे कुछ मुस्लिम दोस्त मुसलमानों की कुरीतियों के बारे में लिखते हैं तो उन्हें मुसलमान आकर इसी तरह से बुरा भला कहते हैं।

देखिए आपको सिर्फ अपने समुदाय की कमियों और कुरीतियों पर बोलने का अधिकार है दूसरे धर्म या समुदाय के खिलाफ लिखने या बोलने का आपको कोई अधिकार नहीं है हालांकि आपको यही अच्छा लगता है कि आप दूसरे धर्म की बुराई खोजें और उन्हें बुरा भला कहें इससे आपका झूठ घमण्ड और ज्यादा फूल जाता है कि देखो मैं कितना महान हूँ।

मान लीजिए जब आपके समुदाय का ही व्यक्ति आपके समुदाय की कुरीतियों के बारे में कहता है तो वह आपका सबसे बड़ा मित्र है। आपके दुश्मन दूसरे धर्म के लोग नहीं है, आपका अज्ञान गरीबी और पिछड़ापन आपका सबसे बड़ा दुश्मन है। अगर हिन्दू खत्म होंगे तो वह गरीबी अज्ञान और अन्धविश्वास की वजह से खत्म होंगे मुसलमान हिन्दुओं का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, मुसलमान डूबेगें तो अपनी जहालत और गरीबी की वजह से, हिन्दू लोग मुसलमानों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

डार्विन का सिद्धान्त है कि दुनियां में वही प्रजातियाँ बची जिन्होंने बदलते समय के साथ अपने को ढाल लिया जो नहीं बदल पाये वह जीव मिट गए। आप अगर आज के हिसाब से नहीं बदलते तो आप मिट जाऐंगे, संसार रोज बदल रहा है आपको बदलना ही पड़ेगा आपकी जिद है कि आप भी ज्यादा पीछे जाकर धर्म निकाल कर उस पर चलेंगे आप पुराने ढंग का खाना, पुराने ढंग के कपड़े, पुराने रीति–रिवाज, औरतों की गुलामी और बच्चों को दबा कर रखने की जिद पर अड़े हुए हैं। जो पार्टी आपकी इन मूर्खता से भरी जिद का समर्थन करती है आप उसे सत्ता दे देते हैं। इसीलिए आपकी गरीबी, जहालत बीमारी मिट नहीं रही है। आपका मजहबी पिछड़ापन आपका दुश्मन बन चुका है, आपको कुछ कहो तो आपको लगता है कि अगर आपने यह मान लिया कि आपके समुदाय में कोई कमजोरी है तो इससे आपका दुश्मन धर्म जीत जायेगा। हिन्दू सोचता है कि मैं खुद को क्यों गलत मानूँ? इस डर के कारण दोनों अपनी बेवकूफियों की जी जान से हिफाजत कर रहे हैं।

यह बिल्कुल सत्य ही स्पष्ट है कि भारत का उच्च और उच्च मध्यम वर्ग अपने आप को भारत का भाग्य–विधाता समझ रहा है और साथ ही कानून से ऊपर भी कानून तो इनकी जेब में बंद है, इनके इशारे पर ही कानून और शासन–प्रशासन चल रहे है पूरे देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक व्यवस्था और जीवन इनके द्वारा निर्मित और निर्देशित मूल्यों, सिद्धान्तों, आदर्शों और नियमों पर चल रहा है। ये ही हमारे जीवन मूल्य और जीवन पद्धति भी तय कर रहे हैं। देश की सारी सम्पत्ति, संपदा और प्राकृतिक संसाधन, देश के कानून, देश का संविधान,, देश का प्रशासन और संस्कार पर इनका ही अधिकार है उनके इन अधिकारों को चुनौती देने वाला आज कोई भी नहीं है। देश को ये लोग अपनी लाठी से हांक रहे हैं और देश की जनता भेड़–बकरियाँ बनी हुई इनके इशारों पर चल रही हैं अपना वैयक्तिक और पारिवारिक स्वार्थ और हित ही राष्ट्रहित है और इसकी सेवा ही राष्ट्रभक्ति है। ये देश के कर्णधार हैं और पूरे देश को कान पकड़कर जो चाहते हैं करवा रहे हैं। बहुसंख्यक मेहनतकश अवाम का दुःख उनकी तकलीफें, उनकी दुर्दशा और उनके जीवन की मजबूरियाँ इनके लिए कोई मायने नहीं रखतीं। परिजीवतावाद ये ठेठ शब्दों में कहें तो हरामखोरी के सर्वोच्च सोपान पर आज ये खड़े होकर राष्ट्रभक्ति के गीत गा रहे हैं। संविधान, लोकतन्त्र, मानवाधिकार, धर्मनिरपेक्षता, नागरिक अधिकार, संवैधानिक संस्थाओं की अवमानना या राजनीतिक संस्कृति का अपराधीकरण, बाजारीकरण, लंपटीकरण और भगवाकरण का इनके लिए कोई मतलब नहीं होता है अस्सी प्रतिशत भारतीयों को भोजन, वस्त्र और आवास, शिक्षा और स्वस्थ्य, खेलकूद और मनोरंजन की कोई सुविधा है या नहीं इससे भी कोई चिता नहीं ये अपने आप में मगन हैं। हर गलत तरीके से पैसे बनाना और पैसे से दुनियां का हर सुख खरीदना ही इनकी जिंदगी का अभीष्ट है। बच्चों को विदेशों में पढ़ाना, विदेशों में नौकरी पाना, विदेशों में घूमना और खरीददारी करना ही इनका शौक है अपने शौक के लिए ये आमजनता पर कोई भी अत्याचार कर सकते हैं इनके लिए मानवीय मूल्यों, सिद्धान्तों, आदर्शों और संवेदनाओं का कोई महत्व नहीं है। ऐसे ही सुख–सुविधाओं से परिपूर्ण, भोगविलास में

लिप्त और अपने आप में संकुचित यह उच्च और मध्यम वर्ग ने अपने लिए छोटे–छोटे सुरक्षित टापू बना लिए हैं, जहाँ इनके अलावा किसी और का प्रवेश वर्जित है।

मानव जीवन एक सतत् प्रक्रिया है– मानव ने दो पैरों पर चलना सीखा, आग जलाई, टायर का आविष्कार किया। उस वक्त के मानव को पता था कि यह विकास एक सहज प्रक्रिया का हिस्सा है, इसलिए उसने कहीं नहीं लिखा या अपने बच्चों को याद करवाया कि फलाँ आदमी ने सबसे पहले चलना सीखा, या फलाँ आदमी ने सबसे पहले आग जलाई उन्हें मालूम था कि आज इस इंसान ने बेहतर किया है कल किसी और का बच्चा आगे बढ़ कर बेहतर करेगा। यह साधारण मानवीय और सामाजिक प्रक्रिया है।

परन्तु आधुनिक युग में मूर्खतावश एक आदमी को श्रेय देना यूँ बोलो कि क्रेडिट चुराने की होड़ लग गयी है। भाप के इंजन से लेकर डीजल इंजन से होते हुए मैट्रो की स्पीड पकड़ने से लेकर बुलेट ट्रेन तक एक सहज विकास प्रक्रिया है कोई भी एक पोइंट ऐसे आप नहीं ढूँढ सकते जो कि पहली पोइंट से प्रभावित न हो। इसी तरह मुँह से आवाज निकलने और जोर से आवाज निकाल कर हवा के सहारे आवाज पहुँचाने से लेकर तार के सहारे और फिर बेतार यानि कि मोबाइल की विकास प्रक्रिया में आप को कहीं टूटन नहीं मिलेगी। अगर पहला इंसान आवाज न निकालता तो मोबाइल तक पहुँचना नामुमकिन था। इसीलिए आप लोगों से अनुरोध है कि एक आदमी को क्रेडिट देने और जयकारे की मानसिकता से अपने आप को बचाएं और अपने बच्चों को भी विकास की इस सहजता के बारे में बताएं। जिस दिन हम जीवन की इस सहजता को स्वीकार करने लगेंगे, सारी दुश्वारियां अपने आप दूर हो जाएँगी।

मूलनिवासियों के महानायक महिशासुर –

सबसे पहले इस देश के लोगों को विशेषकर युवा पीढ़ी को समझना चाहिए कि जो भी पौराणिक कथाओं में असुर दैत्य, राक्षस बताए गये हैं वो भारत के मूल नागरिक व उनके पूर्वज हैं विदेशी सत्ता जहाँ भी कब्जा करती है तो सबसे पहले बलपूर्वक सत्ता के केन्द्र पर कब्जा किया जाता है और उसके बाद सांस्कृतिक संक्रमण करने के लिए काल्पनिक साहित्य रचे जाते हैं। अपनी मूल संस्कृति से भ्रमित व नई संस्कृति से संक्रमित लोग दिशाहीन हो जाते हैं। यह दिशाहीनता सत्ता को स्थायित्व का अवसर देती है और सत्ता अपने हिसाब से हाँकने लग जाती है।

मार्कण्डेय पुराण, सप्तशती सरीखे साहित्य तार्किक रूप से पढ़ने पर आपको ज्ञात होगा कि किस तरह बंग प्रदेश अर्थात वर्तमान बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा व बंगाल पर राज करने वाले मूलनिवासी राजा महिषासुर को हराया गया उनकी हत्या की गई थी कुछ अति–तार्किक लोग सिरे से गपोड कथा कह कर खारिज कर देते हैं मगर साहित्य तोड़–मरोड़ ही सही मगर तत्कालीन समाज की व्यवस्था की सच्चाई बयाँ कर ही देता है। मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं में पात्र/नायक के नाम भले ही काल्पनिक हो मगर तत्कालीन समाज का चित्रण प्रदर्शित तो हो जाता है।

महिषासुर के पिता का नाम रंभासुर व माता का नाम श्यमला था। महिष का अर्थ होता है भैंस व असुर का मतलब होता है अनार्य, मूलनिवासी है। जातियों का उद्भव भले ही बाद में हुआ हो मगर ग्वाला जाति की जड़ें अर्थात पिछड़ों का जुड़ाव महिषासुर वंश से होता प्रतीत होता है। कई वेदों व शास्त्रों में कहा गया है कि शुरू में वर्ण कर्म आधारित तय होता था और बाद में कर्म के हिसाब से जातियों का उद्भव हुआ। मनुस्मृति ने कर्मों को जातियों का स्वरूप देकर भारत के मूलनिवासियों को 6700 से ज्यादा जातियों में विभाजन की नींव रखी थी। इस प्रकार देखा जाय तो महिषासुर पिछड़ों का निकटतम वंशज था।

आर्यों की धूर्तता पर किसी भी इतिहासकार या तर्कशास्त्री ने सवाल खड़ा नहीं किया कि हिरण्यकश्यप अर्थात उत्तरी भारत के राजा जिसकी राजधानी राजस्थान हिंडोन में थी उससे भी युद्ध इन्द्र करता है और कई साल तक वह विजित नहीं हो पाता है तो आर्य विष्णु उनकी मदद को आगे आते है और वो ही इंद्र बंग प्रदेश के राजा महिषासुर से तकरीबन 100 साल युद्ध करता है मगर जीत नहीं पाता है तो आर्य विष्णु उनकी मदद के लिए दुर्गा नाम की महिला को

भेजता है। जब राजा बलि से सैकड़ों साल लड़ने के बाद इंद्र जीत नहीं पाता है तो आर्य विष्णु बामन को भिक्षुक के रूप में मदद को भेजता है। दरअसल इंद्र कोइ अकेला इंसान नहीं बल्कि आर्यों की सेनाओं के सेनापति की उपाधि थी जिस तरफ ध्यान नहीं दिया गया।

मार्कण्डेय पुराण का रचनाकाल 250 ईसवी के आसपास का माना जाता है इसका मतलब महिषासुर उससे पहले राज करता था। दुर्गा को सप्तशती में महिषासुर मर्दिनी कहा गया है क्योंकि आर्य मर्दों से यह काम नहीं हुआ था और एक औरत को आगे करके महिषासुर की हत्या की गई थी आर्यों अर्थात देवताओं को नौ दिन–रात तक इस इंतजार में महिषासुर के महल के चारों तरफ जंगलों में भूखे–प्यासे छुपकर रहना पड़ा कि कब दुर्गा महिषासुर के कमरे में प्रवेश करके उस पर हमला करे और कब हम महल पर धावा बोलें महिषासुर न्यायप्रिय व स्त्री पर हमला न करने वाला नायक था शायद इसलिए आर्यों ने दुर्गा को आगे किया होगा।

दूसरा सवाल यह खड़ा होता है कि बंगाल में दुर्गा पंडाल लगते है व दुर्गा की मूर्ति निर्माण के लिए मिट्टी का एक भाग वैश्याओं के आंगन से लाया जाता है जब जे0एन0यू0 से ताल्लुक रखने वाले ऑल इंडिया बैकवर्ड स्टूडैण्ट फेडरेशन तले महिषासुर शहादत दिवस मनाया गया और कुछ छात्रों ने यह वैश्या के आंगन से मिट्टी लाने परम्परा को लेकर सवाल खड़ा किया तो तत्कालीन राज्य सभा सांसद स्मृति ईरानी ने आरोप लगाया कि ये छात्र दुर्गा को वैश्या कह रहे हैं।

दुर्गा सप्तशती में लिखा है कि दुर्गा महिषासुर को कहती है–"हे मूढ! जब तक में मधुपान न कर लूं तब तक क्षण भर के लिए तू भी गरज ले, मेरे द्वारा संग्राम भूमि में तेरा वध हो जाने पर देवता भी गरजेंगे!" संग्राम भूमि में कौन मधुपान करके लड़ता है यह सवाल तो खड़ा होता ही है और इस पर विचार विमर्श को आगे बढ़ाया जाना चाहिए।
यह तो तय प्रतीत होता है कि महिषासुर के साथ 9 दिवसीय युद्ध में आर्य/देवता भूखे इंतजार कर रहे थे और जैसे ही हत्या कर दी गई तो जश्न मनाया गया और आज की दुर्गा पूजा, नवरात्रा के उपवास व दशहरा का जश्न उसी के उपलक्ष्य में किया जाता है इसके साथ रामायण की रामनवमी को जोड़कर दशहरा रावण जलाने का कार्यक्रम भी हो गया! महिषासुर को जलाओ या रावण को जलाओ मगर थे तो मूलनिवासी राजा ही!

विदेशी आर्यों, लुटेरों, आक्रांताओं द्वारा मूलनिवासी राजाओं की हत्या कर उनकी जीत पर जश्न मनाये जाते हैं और कहा जाता है कि मूलनिवासी समाज के लोग इसमें बढ़–चढ़ कर हिस्सा लें, विरोध के बजाय जश्न में शामिल होने की सलाह दी जाती है और उन मूलनिवासी लोगों पर मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं जो अपने पूर्वजों की जयंती या शहादत दिवस मनाते हैं।

कैसा समाज बनाया जा रहा है? कैसे देश की नींब मजबूत की जा रही है? इस देश के लोगों को ही अपने पूर्वजों की हत्याओं पर जश्न मनाने को कहते हो? हकीकत में अगर इस देश को बनाना चाहते हो तो ये जश्न बंद कर दो हर क्षेत्र की स्थानीय संस्कृति के उत्सवों की मदद करके राष्ट्रीय मनोरंजन के साधन बनाओ।
झारखण्ड के पूर्व मुख्यमंन्त्री शिबू सोरेन ने कहा कि "मुझे गर्व हे कि मैं महिषासुर का वंशज हूँ।" इतिहास सिर्फ सांस्कृतिक संक्रमण या गुलामी से नहीं मिटाए जा सकते आज मूलनिवासी लोग इतिहास के गोताखोर बनकर इतिहास खोदकर निकाल रहे हैं और उसके लिए तुम्हारे ही साहित्य को सीढ़ियों के रूप में उपयोग में ले रहे हैं।

आज धार्मिक भावना आहत हो गई हमारी आस्था को ठेस पहुंचाई गई हमारी श्रद्धा को विचलित किया गया, सरीखे हंगामे करके देश की बुद्धिजीविता, तार्किकता व वैज्ञानिक सोच के साथ पैदा हो रही नई सोच का कत्ल किया जा रहा है। हम देख रहे हैं कि 2019 के बाद इस तरह के विमर्श खत्म कर दिये गए इस तरह उठते सवालों को दबाकर देश की बुनियाद ही खोखली की जा सकती है। अभी जो रावण, महिषासुर, बलि, हिरण्यकश्यप शहादत दिवस के छोटे–छोटे टापू नजर आ रहे हैं वो एक दिन इस देश के राष्ट्रीय उत्सव होंगे अभी गली–कूँचो से जो इक्के–दुक्के

आवाजें आ रही है वो भविष्य में इस देश की राष्ट्रीय आवाज होगी। हमारे नायकों ने शहादत दी है कभी पलायन नहीं किया और हम भी संघर्ष के मैदान में ही खड़े हैं। इस बात को याद रखा जाय कि जिस आवाज को जितनी दबाई जाती है वो एकत्रित होकर विस्फोट के रूप में फूटती है। दबाव व विस्फोट की ऊर्जा का वैज्ञानिक ज्ञान साथ में रखकर ये सब कार्य होने चाहिए।

सन्दर्भ –

1. प्रेमसिंह सियाग– सामाजिक विचारक
2. अपौरूषेय–वाणी 24/06/2017
3. अपौरूषेय–वाणी 23/09/2017